आर एन आई नं. (आवेदित) DELHIN 283333/ दुमाही बाल पत्रिका

# पलूटो

अंक 2 वर्ष 1 जून - जुलाई, 2016

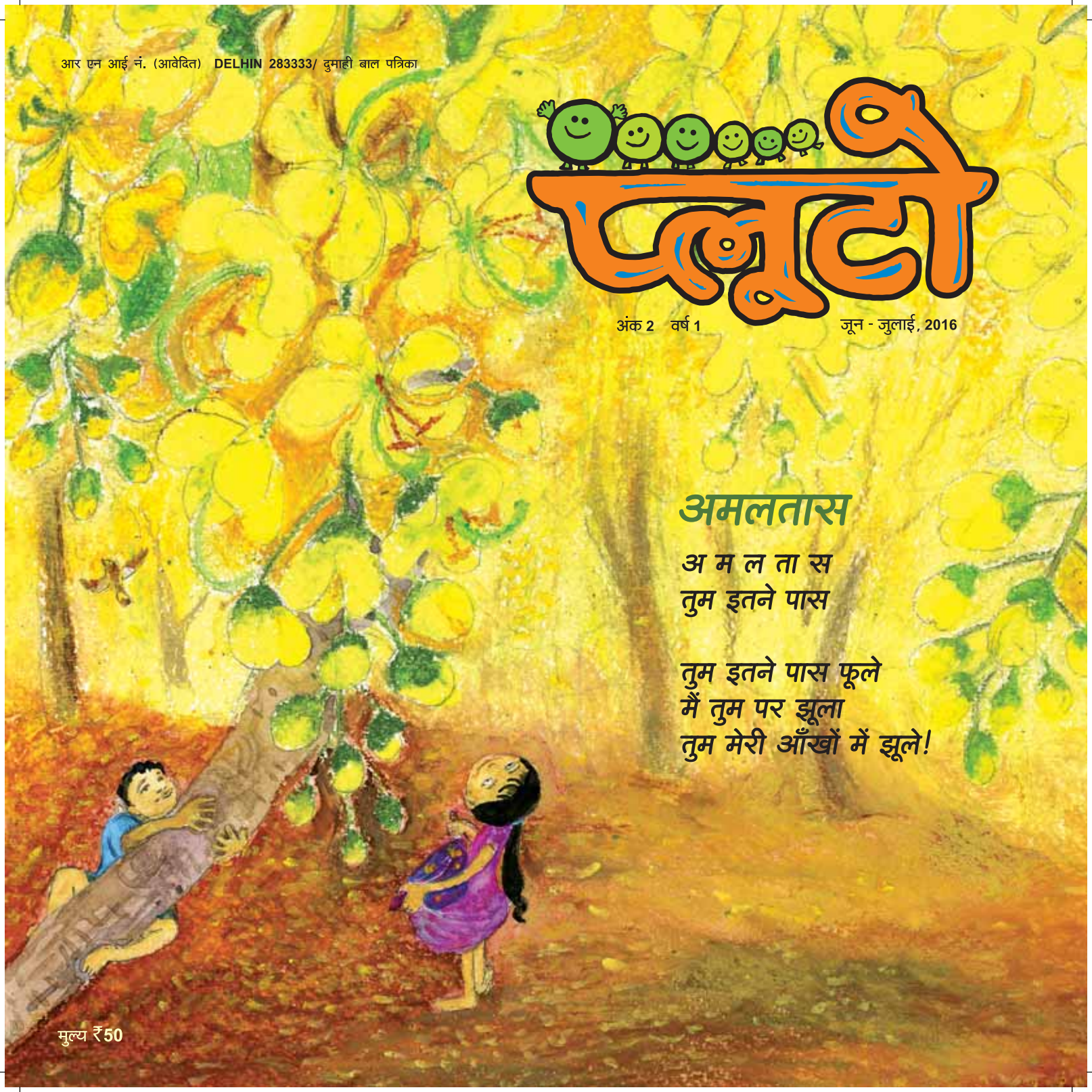

## अमलतास

अ म ल ता स
तुम इतने पास

तुम इतने पास फूले
मैं तुम पर झूला
तुम मेरी आँखों में झूले!

मुल्य ₹50

छींक
प्रभात
मक्खी ने छींका
आ छीं
मच्छर ने छींका
आ छीं
हाथी ने छींका
ॐ छीं
चूहे ने छींका
फूँ छीं
चींटी ने छींका
ॐ ही
चींटे ने छींका
फूँ हीं

# आँख खुली तो सपना गिर गया

शशि सबलोक

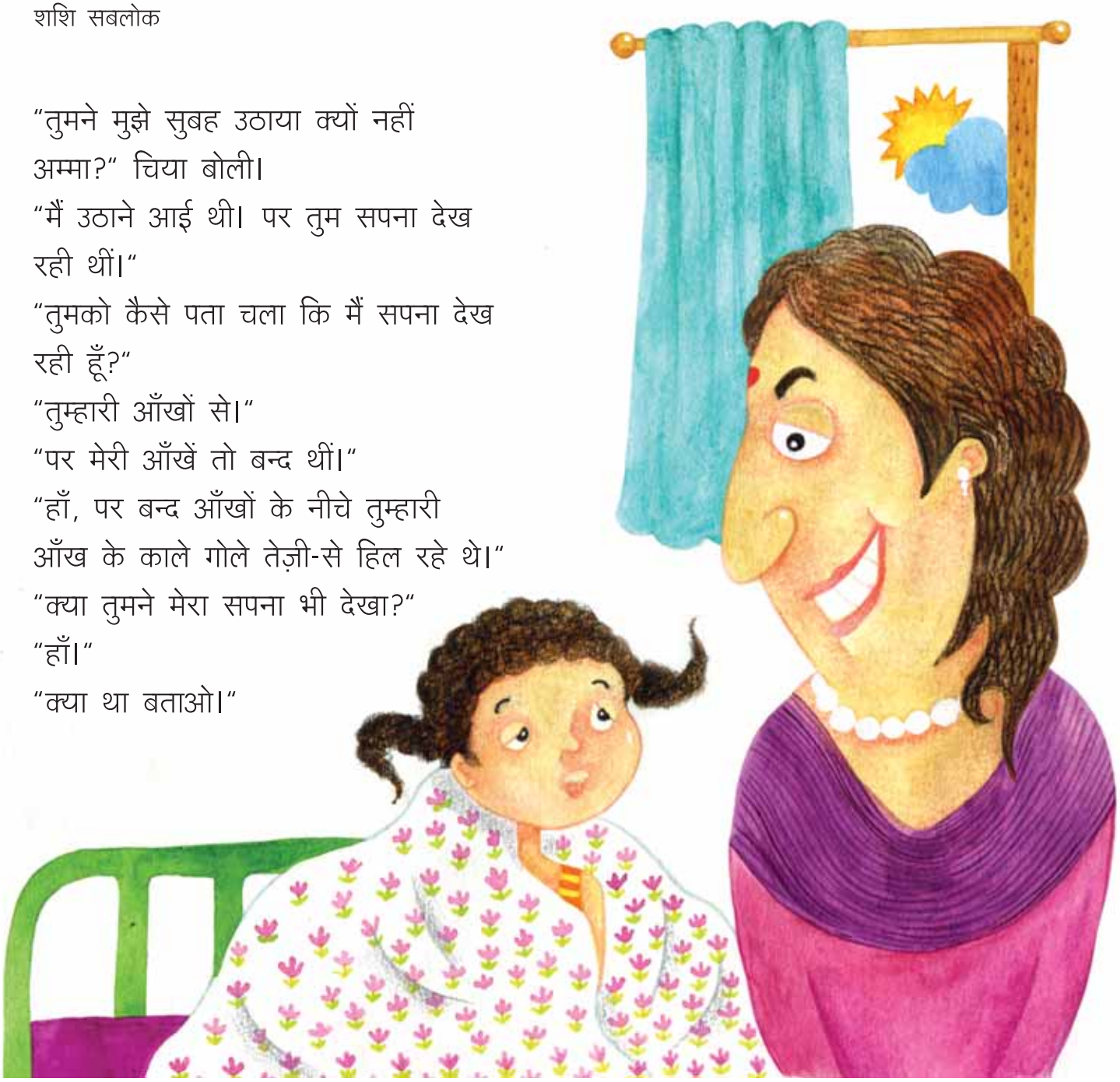

"तुमने मुझे सुबह उठाया क्यों नहीं अम्मा?" चिया बोली।

"मैं उठाने आई थी। पर तुम सपना देख रही थीं।"

"तुमको कैसे पता चला कि मैं सपना देख रही हूँ?"

"तुम्हारी आँखों से।"

"पर मेरी आँखें तो बन्द थीं।"

"हाँ, पर बन्द आँखों के नीचे तुम्हारी आँख के काले गोले तेज़ी-से हिल रहे थे।"

"क्या तुमने मेरा सपना भी देखा?"

"हाँ।"

"क्या था बताओ।"

"तुम और मैं मछली बनकर समुद्र में तैर रहे थे। फिर तैरते-तैरते वहाँ पहुँचे जहाँ समुद्र आसमान से मिलता है।"

"फिर..."

"फिर हम उचककर आसमान पर चढ़ गए। और आसमान में उड़ने लगे।"

"फिर..."

"उड़ते-उड़ते हम थक गए। और एक बादल पर बैठ गए। हवाएँ तेज़ चल रही थीं। तो हमने एक बादल को कसकर पकड़ लिया। बादल बोला छोड़ दो मुझे गुदगुदी होती है..."

"फिर...."

"फिर तुमने कहा हवाएँ तेज़ हैं। हमको उड़ा ले जाएगीं। तो बादल ने हवा के कान में कुछ कहा। हवा धीरे बहने लगी और तुमको नींद आ गई।"

"....आगे क्या हुआ मैं बताती हूँ।" चिया

बोली। "फिर मैंने सपना देखा कि मुझे स्कूल जल्दी जाना था। रात को मैंने अम्मा से कहा कि मुझे जल्दी जगा देना। और सो गई। पर रात में मैंने करवट ली। और अम्मा के सपने में गिर गई।"

"फिर?" अम्मा बोली।

"फिर... मुझे सोने तो दो तब बताऊँगी।"

...यह कहकर चिया दुबारा सोने चली गई।

चित्रः अजंता गुहाठाकुरता

# चींटी की झपकी

विनता विश्वनाथन

कभी किसी चींटी को एक जगह रुके देखा है। चींटियाँ हमेशा चलती दिखती हैं। पता नहीं उन्हें कहाँ पहुँचने की जल्दी रहती है!

एक दिन मैंने देखा कि एक चींटी रुक-रुक कर चल रही थी। जैसे कुछ सोच रही हो। थोड़ा चलती। फिर रुक जाती। थोड़ा चलती। फिर रुक जाती। कुछ सोचती। फिर चल पड़ती। क्या चींटियाँ सोच-सोच कर चलती होंगी? या क्या वे सोच-सोचकर रुकती होंगी?

इस बात की जाँच कुछ लोगों ने की है। वे कहते हैं कि चींटियाँ चलते-चलते कोई फैसला नहीं लेतीं। उसी रस्ते पर चलना है या कहीं मुड़ जाना है? यह फैसला वे ठहर कर लेती हैं। चींटियाँ तो झपकियाँ भी लेती हैं।

चित्रः वन्दना बिष्ट




लाल चींटियाँ एक मिनिट में बहुत बार झपकियाँ लेती हैं। और रानी चींटी तो नौ घण्टे तक की लम्बी नींद लेती है। चींटियाँ खर्राटे भी लेती होंगी? क्या तुमने किसी चींटी या कीड़े को सोते देखा है? चींटियाँ सोती हैं तो क्या वो सपने भी देखती होंगी? सपने में वे क्या देखती होंगी?

1. अप्रैल का महीना है। चिड़ा-चिड़ी पीपल, बरगद, गूलर जैसे पेड़ों की खोखल ढूँढ रहे हैं। यहाँ वो अपना घोंसला बनाएँगे।

2. यह खोखल अच्छी है। चिड़ी उसमें घुसकर बैठ जाती है। तीन महीने तक वो यहीं रहेगी।

# खोखल में दो महीने

3. चिड़ा मिट्टी ला-लाकर देता है। चिड़ी इस मिट्टी और अपनी बीट से खोखल को बन्द कर देती है। बस छोटी-सी खिड़की खुली छोड़ दी है।

4. चिड़ा खिड़की से चिड़ी को खाना लाकर दे रहा है।

5. खोखल के अन्दर चिड़ी अण्डों पर बैठी है। 22-23 दिनों बाद अण्डों से बच्चे निकलेंगे।

6. 40 दिन तक चिड़ी बच्चों के साथ खोखल में ही रही। दो महीने खोखल में रहने के बाद वो खोखल का दरवाज़ा तोड़ कर बाहर आ गई।

7. चिड़ा-चिड़ी दोनों मिलकर बच्चों का ख्याल रख रहे हैं।

चित्रः सुजाशा दासगुप्ता

8. बच्चे बड़े हो गए हैं।
अब सभी पेड़ पर रहने लगे हैं।

इस चिड़िया का नाम
धनेष या ग्रे हॉर्नबिल।

तुमने कभी किसी चिड़िया का चित्र बनाया है? अगली बार जब चिड़िया तुम्हारे आसपास आए तो उसे ध्यान से देखना। देखते-देखते उसका चित्र बनाना। फिर उसे प्लूटो को भेज देना। तुम सबके बनाए चित्रों में से पाँच चित्र प्लूटो में छापेंगे। इन पाँचों चित्रकारों को दो-दो मज़ेदार किताबों का तोहफा मिलेगा।

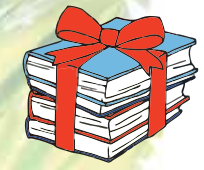

# चलो चिड़िया बनाएँ...

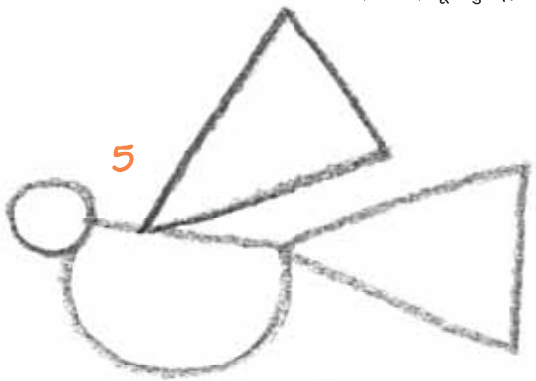

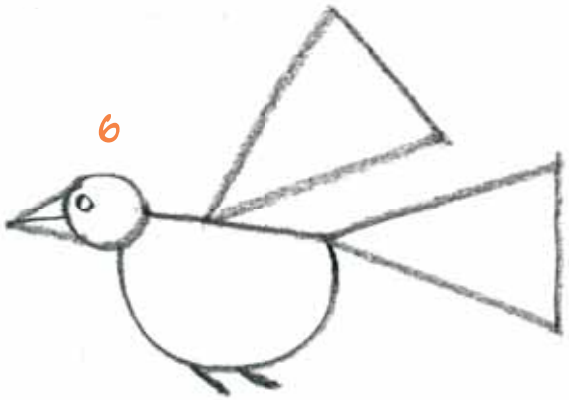

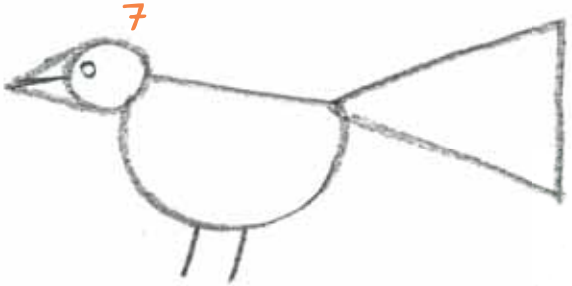

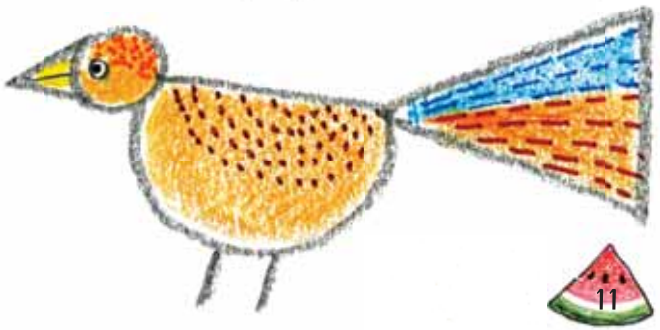

# निमरा का बस्ता

निमरा दूसरी में पढ़ती है। उसके बस्ते में तरह-तरह की चीज़ें मिलती हैं। सूखे रंग-बिरंगे पत्ते। तरह-तरह के पत्थर। पंख। कंचे। कौड़ियाँ। नट-बोल्ट, तार...। उसका बस्ता ही उसकी गुल्लक है। वह रोज़ माँ को यह गुल्लक दिखाती है।

एक दिन वह कुछ खास चीज़ लेकर लौटी। वह एक-एक कर उन्हें बाहर निकालती जा रही थी। पर माँ को वहाँ कुछ नज़र नहीं आ रहा था। निमरा ने सबसे पहले कुत्ते की परछाईं दिखाई। माँ ने पूछा, "तुम्हें यह मिली कहाँ?"

"यह सड़क पर मिली। एक कुत्ते के पास ही पड़ी थी।" निमरा ने झट से जवाब दिया।

फिर उसने माँ से पूछा, "माँ कुत्ते अलग-अलग होते हैं। क्या उनकी परछाईं भी अलग-अलग होती हैं?" माँ यह सुनकर हँस पड़ीं। निमरा ने फिर माँ को चींटी की परछाईं दिखाई। माँ को चींटी की परछाईं बहुत अच्छी लगी। चींटी की परछाईं चींटी से थोड़ी बड़ी दिखती थी।

निमरा ने माँ से पूछा, "माँ, क्या हाथी की परछाईं हाथी से भी बड़ी दिखती होगी?" "हाँ, पर हाथी की परछाईं हाथी की तरह भारी नहीं होती।" माँ ने कहा। "हाथी की परछाईं हाथी की तरह ऊँची भी नहीं होती। और न ही उस पर बैठकर कहीं जा सकते हैं।"

(जी ए कुलकर्णी के बखर बिम्मची को याद करते हुए।)

चित्रः वन्दना बिष्ट

# खट और पट

सुशील शुक्ल

एक थे भाई खट
एक थे भाई पट

कहीं पड़ी थी एक मटर
खट चिल्लाये खटर
पट चिल्लाये पटर

ही ही हू हू
हँसी के ठट्ठे
हट्टे कट्टे
लोग इकट्ठे

खट चिल्लाये
पट
पट चिल्लाये
खट

भागो भाई झट

बिल में मटर
गई फिर बँट
आधी खाए खट
आधी खाए पट

वो देखो खट पट
सोये हैं सट सट।

इस चित्र में कोई छिपा है।
नहीं मिला? पेज 31 देखो...

# मिट्टी के रंग

विनता विश्वनाथन

मेरे आँगन में भी मिट्टी है और मेरे स्कूल में भी मिट्टी है। दोनों का रंग अलग-अलग है। एक लाल है और एक कत्थई। स्कूल के रास्ते में खेत हैं। उनमें धान उगी है। इन खेतों की मिट्टी का रंग हल्का चॉकलेटी है।

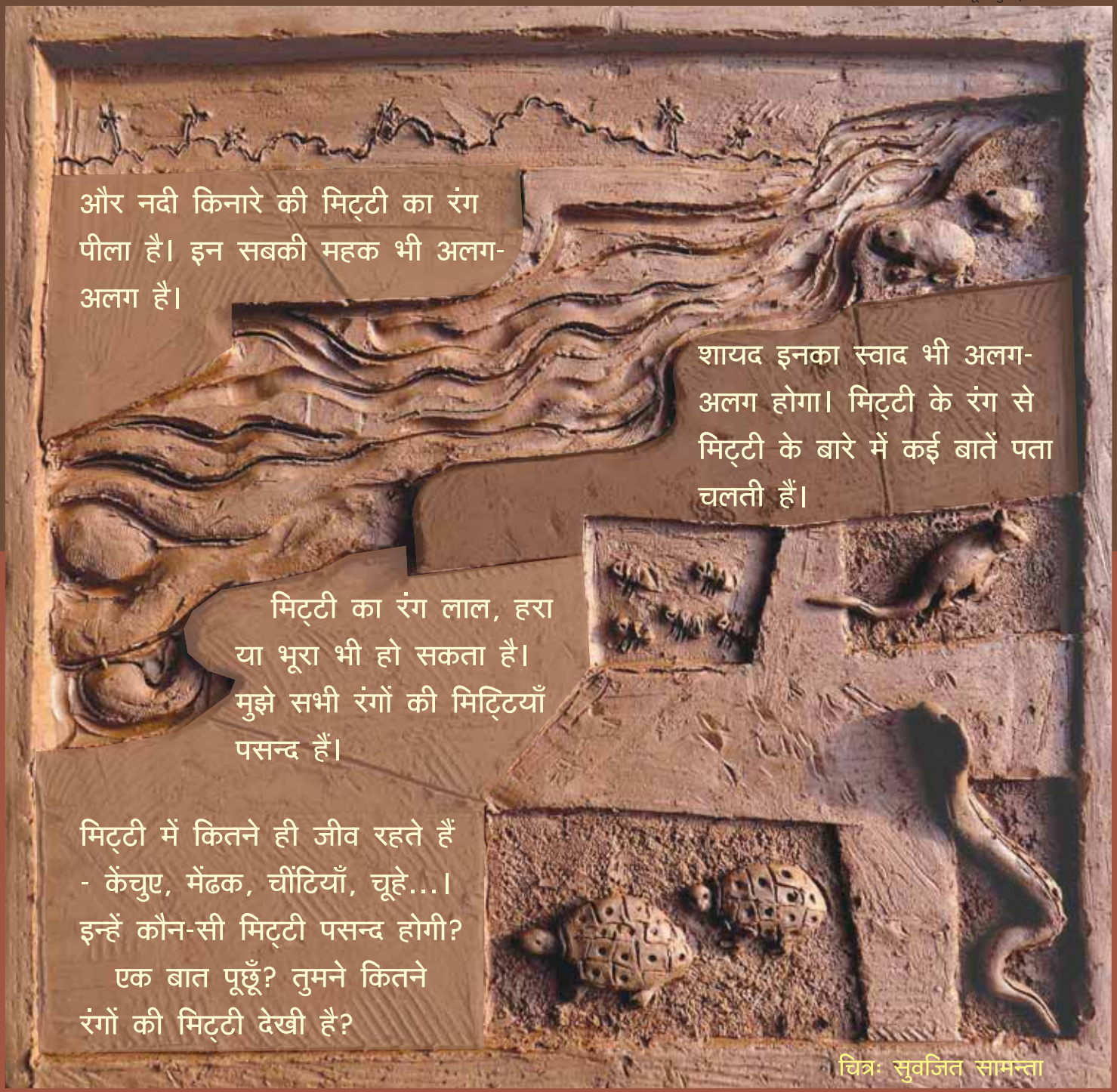

और नदी किनारे की मिट्टी का रंग पीला है। इन सबकी महक भी अलग-अलग है।

शायद इनका स्वाद भी अलग-अलग होगा। मिट्टी के रंग से मिट्टी के बारे में कई बातें पता चलती हैं।

मिट्टी का रंग लाल, हरा या भूरा भी हो सकता है। मुझे सभी रंगों की मिट्टियाँ पसन्द हैं।

मिट्टी में कितने ही जीव रहते हैं - केंचुए, मेंढक, चींटियाँ, चूहे...। इन्हें कौन-सी मिट्टी पसन्द होगी? एक बात पूछूँ? तुमने कितने रंगों की मिट्टी देखी है?

चित्रः सुवजित सामन्ता

चाँद

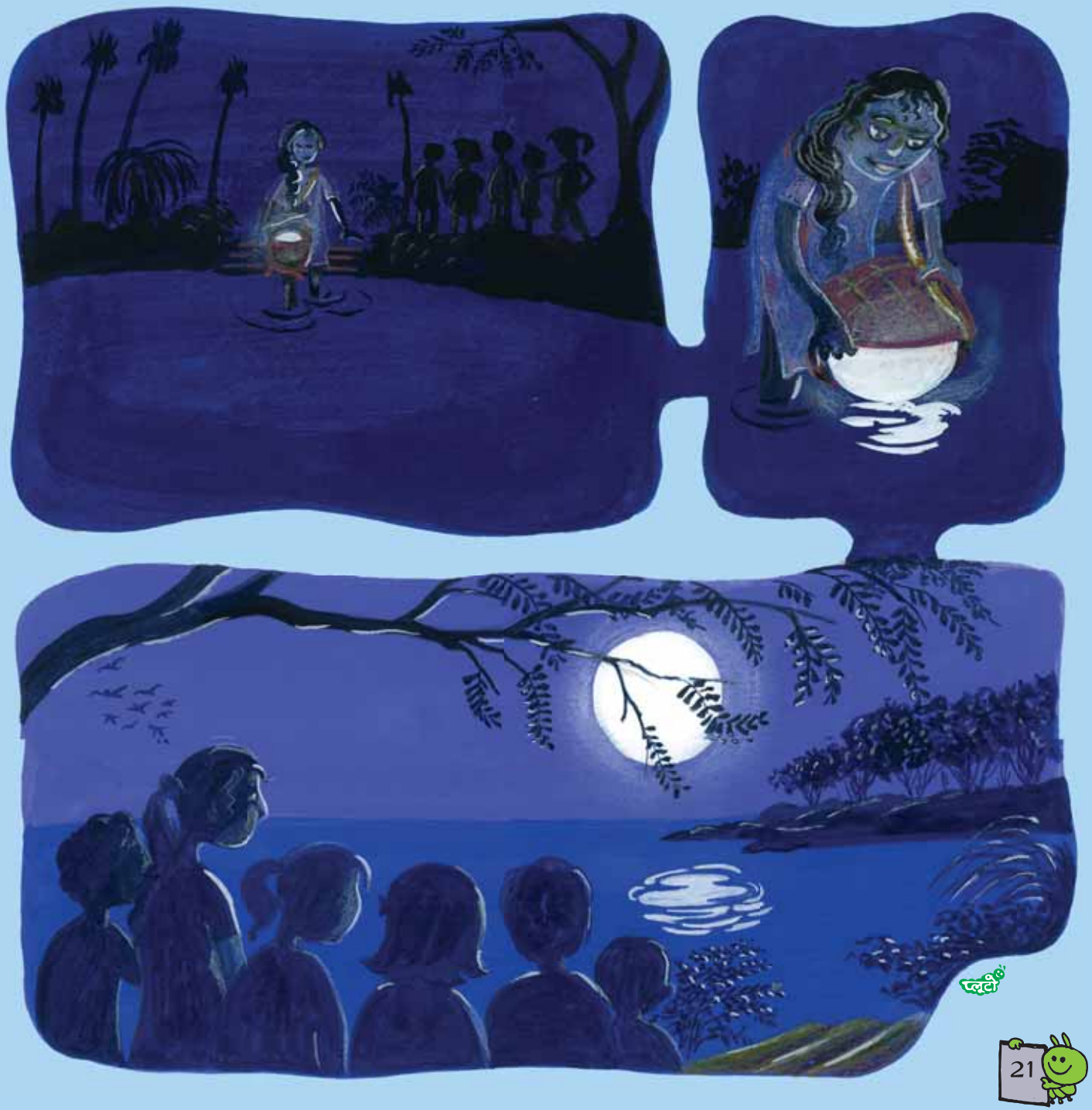

# निडर चूहे

"ये क्या है?"
"पता नहीं। पर है बड़े काम की चीज़।"
"खाने की चीज़ है?"
"नहीं।"
"तो कुतरने की?"
"नहीं।"
"छिपने की?"
"नहीं।"
"तो फिर ये अपने किस काम की?"
"बड़े काम की चीज़ भाई। बड़े काम की चीज़ है।"

"इसे छोड़ और भाग...। वो देख एक बिल्ली इसी तरफ आ रही है।"
"तो आने दे।"
"देख अब मैं यहीं छिपा रहूँगा और बिल्ली कैसे दुम दबाके भागेगी।"
"कैसे?"

"ये देख।" चूहा मोबाइल का एक बटन दबाता है।

भौंभौंभौंभौंभौं....

"चीज़ तो बड़े काम की है। पर भाई एक बात बता...
इसके भीतर क्या कुत्ता है?"
"कुत्ता नहीं है। बस कुत्ते की आवाज़ है।"
"तो इस आवाज़ का कुत्ता कहाँ गया?
वो तो बेचारा भौंक तक नहीं पा रहा होगा?"
हाँ भाई।

"तो वो किसी से बात ही नहीं कर पा रहा होगा?"

दोनों चूहे उदास हो गए।

"कुत्ता अपनी आवाज़ को ढूँढ रहा होगा न?"

"हो सकता है।"

"पर उसकी आवाज़ तो हमारे पास है। अगर यह बिल में हमारे साथ रहेगी तो उसे कैसे मिलेगी?"

"तुम सही कह रहे हो भाई। हम इसे यहीं छोड़ देते हैं। क्या पता इस आवाज़ का कुत्ता इधर आए?"

"भाई, एक बात कहूँ?"

बोल भाई, "हम चूहे ही अच्छे। हमारी आवाज़ हमारे साथ ही रहती है।"

फिर वे दोनों चूहे तीन दिन और तीन रात तक लगातार बात करते रहे। खूब थक गए। अब दोनों चिपककर एक बिल में सो रहे हैं।

चित्रः मिष्टुनी चौधुरी

# रहमत दादा का झोला

सुशील शुक्ल



उन दिनों में बहुत छोटा था। मैं चौथी में पढ़ता था। मुझे कंचे अच्छे लगते थे। पतंगें अच्छी लगती थीं। माँ की चूड़ियाँ अच्छी लगती थीं। मेरा मन करता था उन्हें मैं पहन लूँ। इतनी सुन्दर चूड़ियाँ या तो माँ पहनती थीं या दीदी। मेरे पिता, मेरे भाई और मेरी दादी - ये तीन लोग और मैं चूड़ियाँ नहीं पहनते थे।

दादी कभी-कभी हमारे साथ कंचे खेलती थीं। उनका निशाना बहुत पक्का था। मेरे दोस्त मुझसे कहते - तेरी दादी खेलेंगी तो हम नहीं खेलेंगे। दादी कंचे जीतकर हमीं में बाँट देती थीं।

मैंने अपने दादा जी को नहीं देखा है। उनकी बस एक फोटो हमारे घर में है। इसमें वे एक टोपी लगाए हैं। उनके बाजू में एक बहुत ही सुन्दर थैला है। यह थैला दादी के पास आज भी है। इस थैले पर लिखा है - रहमत। यह मेरे दादाजी के दोस्त का नाम है। इस थैले पर यह नाम दादा जी ने लिखवाया था। कढ़ाई से इसे रशीदा बाजी ने लिखा था। दादा कहते थे कि इससे सबको पता चलेगा कि यह थैला रहमत का है।

इस थैले पर एक तरफ बहुत सुन्दर फूल बने हैं। और एक तरफ खाली रहमत लिखा है। दादाजी की फोटो देखो। वे थैले को टाँगते थे तो रहमत वाला पल्ला सामने रहता। सुन्दर-सुन्दर फूल दूसरी तरफ छिपे रहते। इस झोले को वे बहुत सम्भाल कर रखते थे।

इस झोले के भीतर वे एक और झोला रख लेते थे। एक तरफ सब्ज़ी भरा झोला टँगा रहता। दूसरी तरफ रहमत

वाला झोला टँगा रहता। एकदम खाली। कभी-कभी उनकी सफेद टोपी इसमें पड़ी रहती थी।

रहमत दादा आज भी हैं। वे हमारे घर कभी-कभी आते हैं। बैठक में थोड़ी देर बैठकर चले जाते हैं। बैठक में एक खूँटी है। जब तक वे रहते हैं उनका वही झोला खूँटी से लटका रहता है। उनके जाते ही दादी यह झोला उतार कर पेटी में रख लेती हैं। हमारे घर में सब कहते हैं कि रहमत दादा तो बस अपने झोले को देखने आते हैं।

पर मुझे पता है कि असल में रहमत दादा हमारे घर क्यों आते हैं।

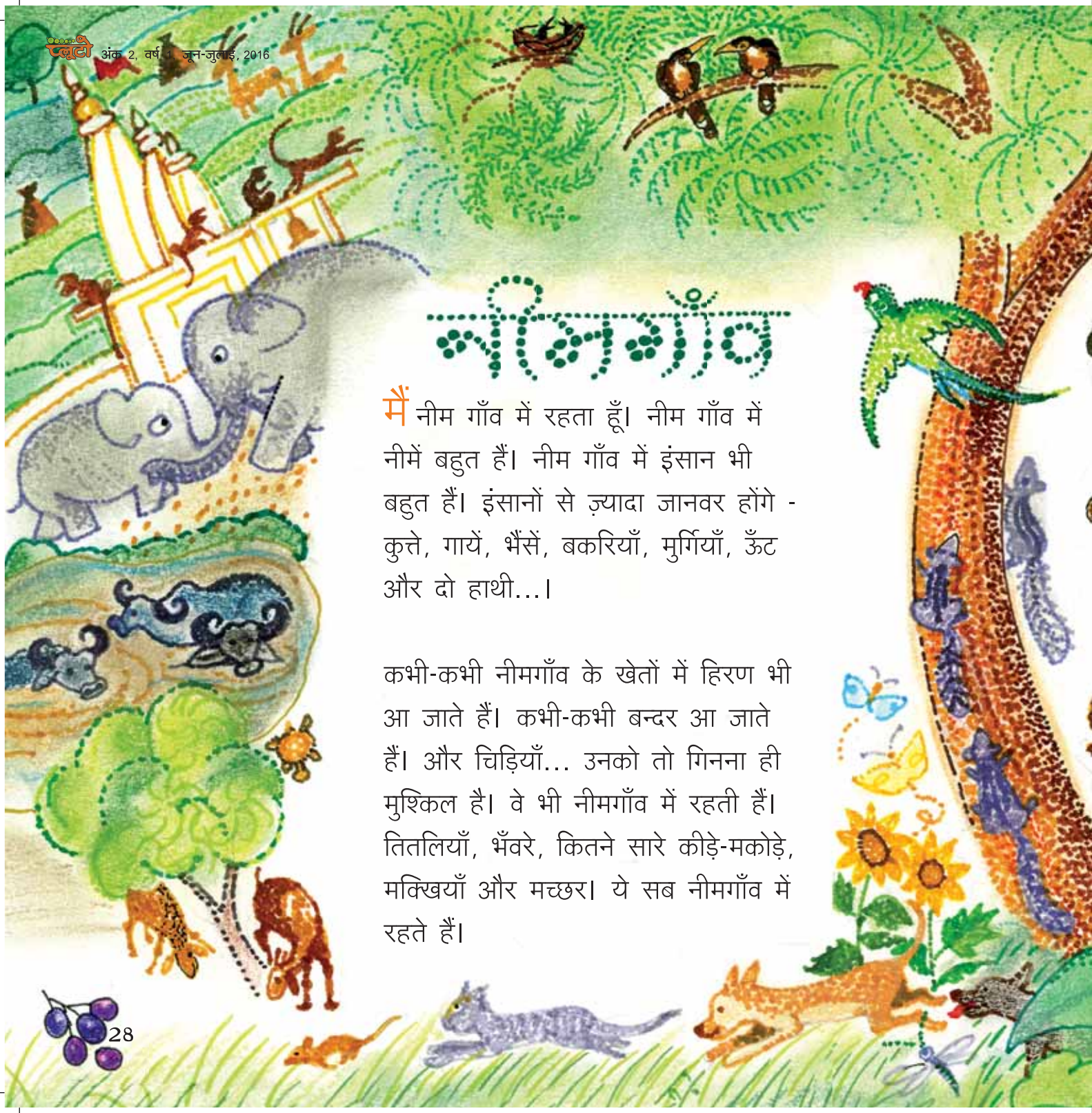

# नीमगाँव

मैं नीम गाँव में रहता हूँ। नीम गाँव में नीमें बहुत हैं। नीम गाँव में इंसान भी बहुत हैं। इंसानों से ज़्यादा जानवर होंगे - कुत्ते, गायें, भैंसें, बकरियाँ, मुर्गियाँ, ऊँट और दो हाथी...।

कभी-कभी नीमगाँव के खेतों में हिरण भी आ जाते हैं। कभी-कभी बन्दर आ जाते हैं। और चिड़ियाँ... उनको तो गिनना ही मुश्किल है। वे भी नीमगाँव में रहती हैं। तितलियाँ, भँवरे, कितने सारे कीड़े-मकोड़े, मक्खियाँ और मच्छर। ये सब नीमगाँव में रहते हैं।

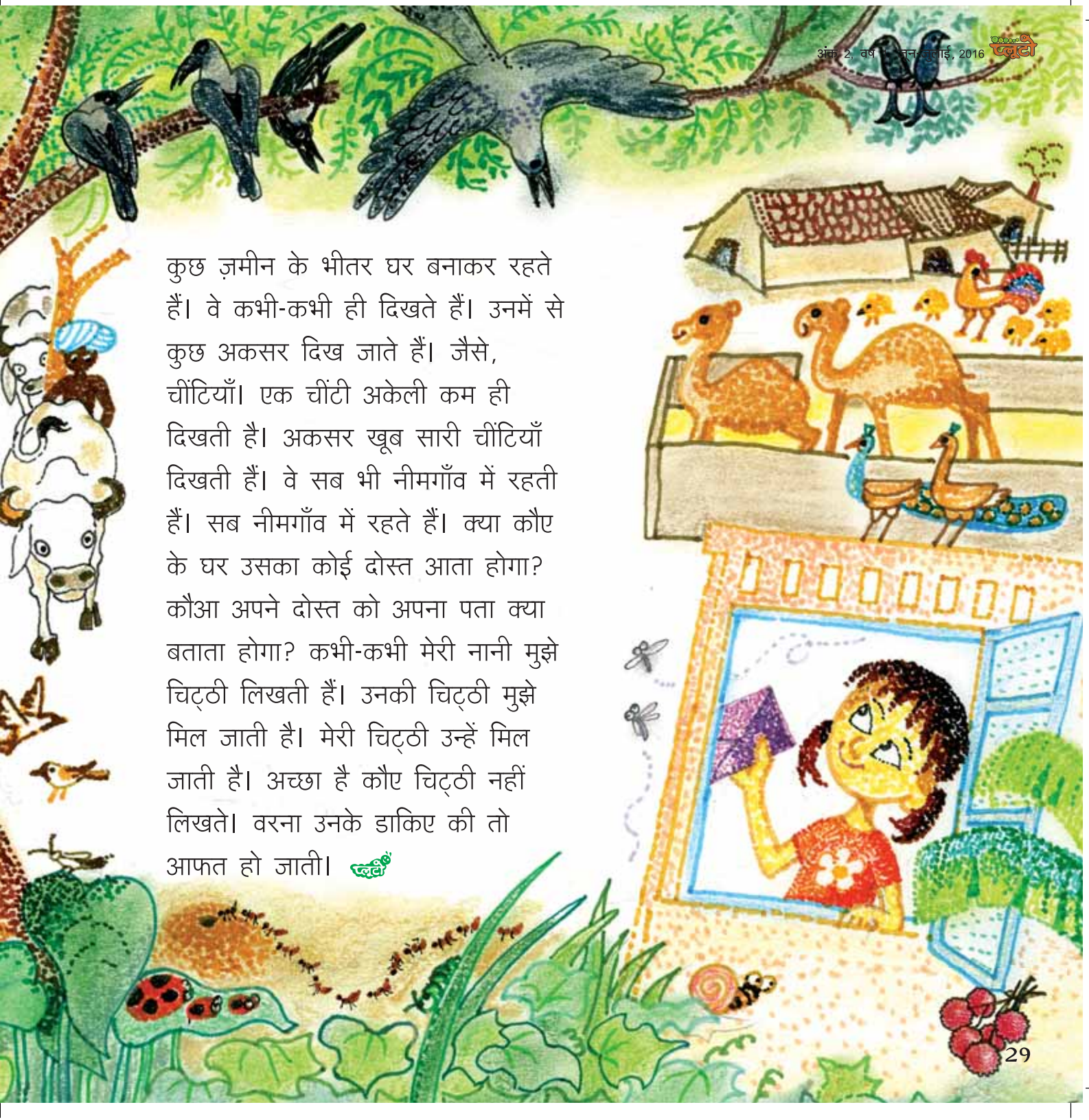

कुछ ज़मीन के भीतर घर बनाकर रहते हैं। वे कभी-कभी ही दिखते हैं। उनमें से कुछ अकसर दिख जाते हैं। जैसे, चींटियाँ। एक चींटी अकेली कम ही दिखती है। अकसर खूब सारी चींटियाँ दिखती हैं। वे सब भी नीमगाँव में रहती हैं। सब नीमगाँव में रहते हैं। क्या कौए के घर उसका कोई दोस्त आता होगा? कौआ अपने दोस्त को अपना पता क्या बताता होगा? कभी-कभी मेरी नानी मुझे चिट्ठी लिखती हैं। उनकी चिट्ठी मुझे मिल जाती है। मेरी चिट्ठी उन्हें मिल जाती है। अच्छा है कौए चिट्ठी नहीं लिखते। वरना उनके डाकिए की तो आफत हो जाती। प्लूटो

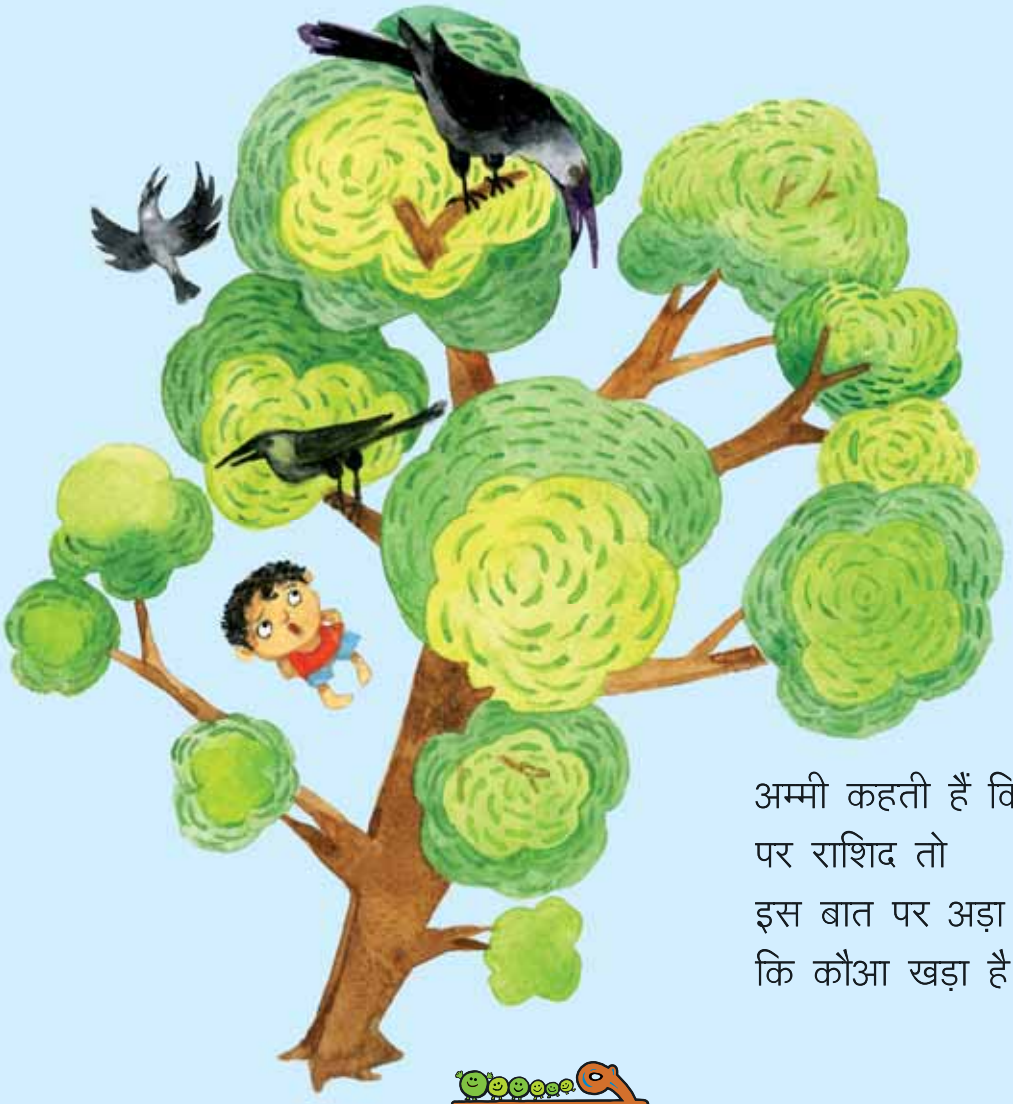

## चटनियाँ

अम्मी कहती हैं कि बैठा है
पर राशिद तो
इस बात पर अड़ा है
कि कौआ खड़ा है।

प्लूटो

**विचार एवं आकल्पनः** सुशील शुक्ल
**डिज़ाइन एवं चित्रः** तापोशी घोषाल

**आवरण चित्रः** तापोशी घोषाल

**मुद्रक तथा प्रकाशक** संजीव कुमार द्वारा तक्षशिला पब्लिकेशन-तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी की इकाई के लिए मल्टी कलर प्रेस, शेड नं. 92 डी.एस.आई.डी.सी., ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 1, नई दिल्ली 110020 से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित, **सम्पादकः रीमा सिंह**

**प्लूटो का पताः**
नॉलेज सेण्टर
सी-404, बेसमेण्ट, डिफेंस कॉलोनी,
नई दिल्ली 110024
फोनः 011- 41555 418/428
ई-मेलः pluto@takshila.net

तरबूज, इमली आदि के बीज,
कपड़ों की कतरनें, बटन
घर में कितनी ही चीज़ें
होती हैं।
क्या तुम इनसे
कोई आकृति
बना सकते हो?
प्लूटो को तुम्हारी
कलाकारियों का
इन्तज़ार रहेगा।

प्लूटो का पता
पेज **30** पर देखो।

आर एन आई नं. (आवेदित) DELHIN 283333/ दुमाही बाल पत्रिका

# गमले में फूल

प्रयाग शुक्ल

एक गमले में फूला फूल
हवा चली तो झूला फूल
फूल फूलकर फूला फूल
मोटा हो गया पतला फूल

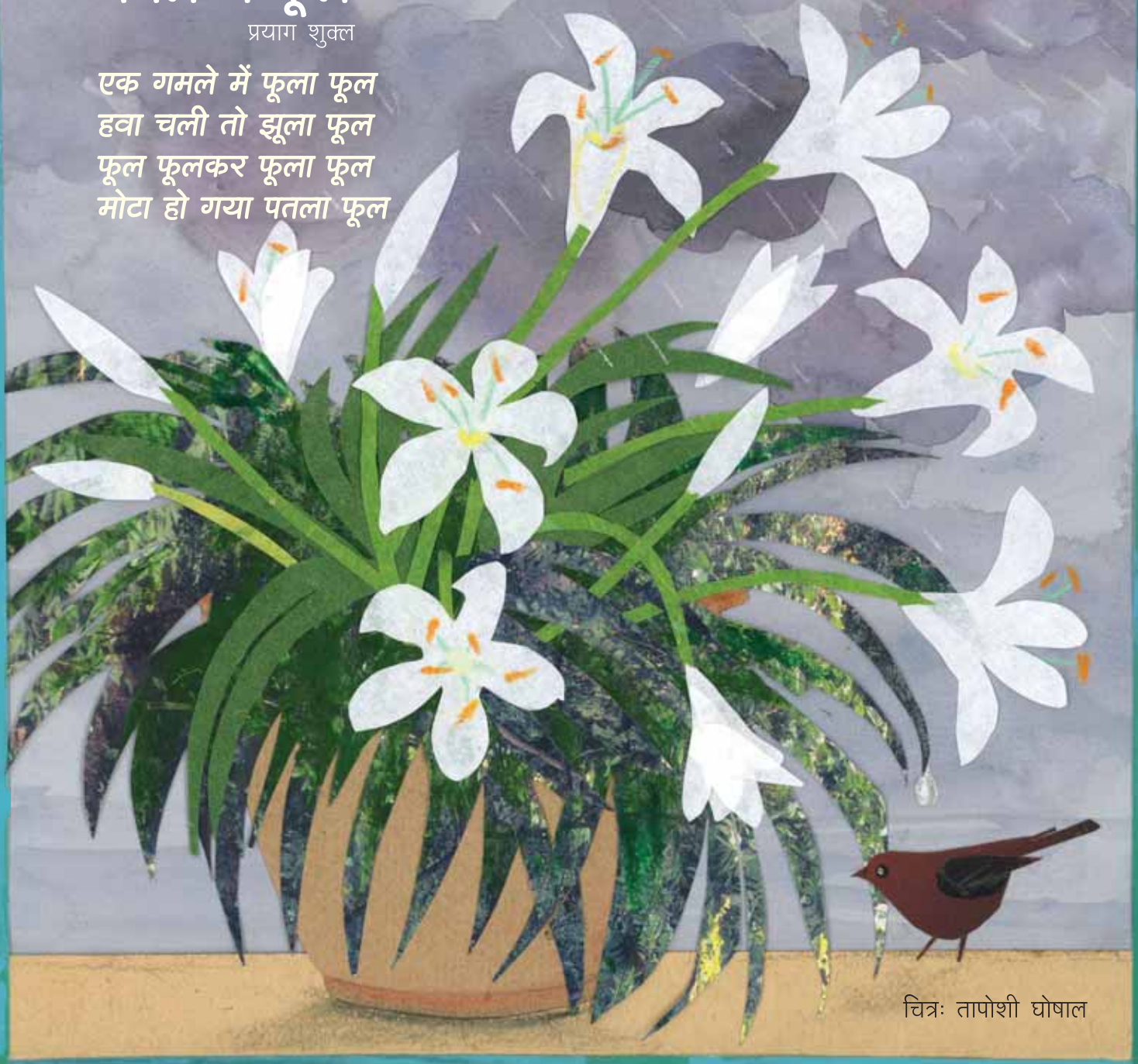

चित्रः तापोशी घोषाल